व्याकरण : वाक्य विचार

विभिन्न शब्दों का सानुशासित ध्वनि समूह जिसमें विशेष अभिप्राय का बोध होता है, वाक्य कहलाता है। वाक्य में विभिन्न शब्दों का सार्थक प्रयोग होता है। कहीं-कहीं लम्बे-लम्बे वाक्यों से छोटे-छोटे अर्थ निकलते हैं तो कहीं-कहीं अति लघु वाक्यों से लम्बे अर्थों का बोध भी होता है, जैसे - 'रात के बाद सूर्योदय काल के प्रकाश में सुगंधित फूलों के रंगों से वह वाटिका खिल उठी थी।' इस वाक्य से यही अर्थ निकला, सुबह वाटिका में रंगीन पुष्प खिले।

'बचाओ!' यह भी एक वाक्य है। इस वाक्य में कौतूहल, रहस्य, रोमांच, आतुरता, आह्वान, प्रेरणा और आर्तनाद जैसी स्थितियाँ गौण हैं।

शब्द भाषा की प्रारम्भिक अवस्था के प्रतीक हैं तो वाक्य उसकी विकासावस्था के सभ्यता के, विकास के साथ वाक्यों का हमारे जीवन में बड़ा महत्त्व है। विभिन्न लोग विभिन्न प्रकार के वाक्य रचनाकार भावप्रकाशन करते हैं, शिक्षितों की वाक्य रचना व्याकरण सम्मत होती है, व्याकरण के सामान्य नियम होते हैं। जिनसे वाक्य रचे जाते हैं। स्पष्टता वाक्य रचना की सबसे बड़ी विशेषता है। संक्षिप्तता, माधुर्य, सन्तुलन आदि भी वाक्यों के गुण हैं। वाक्य में आकांक्षा, योग्यता एवं क्रम-इनका होना अत्यावश्यक है। वाक्य के एक पद को सुनकर अन्य को सुनने की स्वाभाविक ललक ही आकांक्षा है, जैसे-दिनरात, परिश्रम करते हैं, वाक्य में अधूरापन है- 'सभी दिनरात परिश्रम करते हैं। में आकांक्षा की पूर्ति हुई। यहाँ 'सभी' की आकांक्षा थी। प्रत्येक वाक्य में शब्द, पद, अर्थ-बोधन में पूर्णसहायक होना चाहिए, जैसे-मजदूर लकड़ी से दूध दुहता है, इसमें 'योग्यता' का अभाव है क्योंकि लकड़ी से दूध नहीं दुहा जा सकता है, अत: 'मजदूर भैंस को दुहता है। यह वाक्य योग्यता सम्पन्न हुआ। इसी प्रकार क्रम का विधान भी वाक्यों में अत्यावश्यक यह है, जैसे - 'हलुआ मैंने खाया कब।' इसका क्रम मैंने हलुआ कब खाया? ही उचित होगा।

वाक्य विग्रह (Analysis)

वाक्य के शब्दों, पदों एवं वाक्यांशों को अलग-अलग करके उनका पारस्परिक सम्बन्ध बताना वाक्य विग्रह कहलाता है, इसे वाक्य विश्लेषण भी कहा जाता है।

प्रत्येक वाक्य से कोई न कोई अभिप्राय अवश्य निकलता है। इसी अभिप्राय को दो खण्डों में विभाजित कर दिया जाता है- 1. उद्देश्य 2. विधेय

वाक्य का वह खण्ड जिसके बारे में कुछ कहा जाता है, उद्देश्य कहते हैं।

वाक्य का वह खण्ड, जिसमें उद्देश्य के विषय में प्रकाश पड़ता है, विधेय कहते हैं।

मोहन दौड़ता है।

इस वाक्य में 'मोहन' उद्देश्य है तथा 'दौड़ता' है विधेय।

उद्देश्य (Subject)

उद्देश्य का प्रधान अंश कर्ता होता है, कर्ता विस्तार तक उद्देश्य की स्थिति रहती है जैसे- 'दशरथ पुत्र वीर राम ने रावण को मारा इसमें दशरथ के पुत्र वीर राम ने उद्देश्य है तथा रावण को मारा-विधेय।

विधेय में क्रिया तथा क्रिया का विस्तार (कर्मसहित) होता है।

उद्देश्य में कर्ता चार प्रकार से प्रयुक्त होते हैं-

संज्ञा से	-	राम घर जाता है।
सर्वनाम से	-	वह लौट आया होगा।
विशेषण से	-	बुद्धिमान सफलता प्राप्त करते हैं।
क्रियार्थक संज्ञा	-	दौड़ना एक अच्छा व्यायाम है।

इसी कर्ता का चार रूपों में विस्तार होता है, जिसे कर्ता विस्तार कहा जाता है,

जैसे-

विशेषण से	-	ईमानदार लड़का गया।
सम्बन्धबोधक विशेषण से	-	जापान का सिपाही मारा गया।
सामाधिकरण से	-	बादशाह औरंगजेब क्रूर था।
पदबंध से	-	खाकी-खाकी नेकर वाले चपरासी ने कर्ता की ही भाँति कर्म का विस्तार होता है।

विधेय (Predicate)

विधेय की रचना प्रक्रिया निम्नलिखित प्रकार से होती है-

क्रिया से	-	गाय आयी।
कर्म और क्रिया से	-	गाय घास खा गई। (सकर्मक क्रिया के होने पर)
कर्म के विस्तार और क्रिया से	-	गाय थोड़ी-सी कुछ घास खा गई।
पूरक से और क्रिया से	-	वह तेज भागा।

वह बहुत धीरे चलता है। वह डरते-डरते चढ़-चढ़ कर गिरा। जो शब्द कर्ता का विस्तार करते हैं वे ही कर्म का विस्तार करते हैं। जैसे-बुद्धिमान् पुरुष ही यह भेद जानते हैं। इसमें बुद्धिमान् शब्द कर्म के काम का भी विस्तार करता है और कर्ता का भी।

क्रिया के विस्तार एवं क्रिया से - घोड़ी तेज दौड़ी। उसने बहुत अच्छा गाया।

विधेय में इसी प्रकार का विस्तार भी किया जाता है-

क्रिया विशेषण - तुम वहाँ क्यों जा रहे हो?

विशेषण - वह बहुत हकलाता है।

कृदन्त - वह रोता हुआ जा रहा था।

क्रिया की विशेषता सूचक वाक्यांश- वह बहुत ही घबड़ाहट में गया है। क्रिया विस्तार-करण, सम्प्रदान, अपादान, अपादान, अधिकरण कारक के अनुसार भी होता है-

करण - महेश ने कुल्हाड़ी से उसे मारा।

सम्प्रदान - नीरज के लिए साइकिल लाया हूँ।

अपादान - वर्मा जी मकान से गिर पड़े।

अधिकरण - वह रेल की छत पर बैठा था।

इन उपर्युक्त आधारों पर वाक्य का विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है - **उस बहादुर लड़के ने** शेर की गर्दन पर जोर का मुक्का मारकर उसे गिरा दिया?

उस कर्ता विस्तार। बहादुर कर्ता विस्तार। लड़के ने कर्ता प्रधान। शेर की कर्म प्रधान। गर्दन पर कर्म विस्तार। जोर का कर्म विस्तार। मुक्का मारकर पूरक विस्तार। उसे कर्म विस्तार। गिरा दिया क्रिया प्रधान।

वाक्य भेद

अर्थ की दृष्टि से वाक्यों के आठ भेद होते हैं-

विधिवाचक, निषेधवाचक, आज्ञार्थक, प्रश्नवाचक, विस्मयादिबोधक, सन्देह वाचक, इच्छा वाचक, संकेत वाचक।

1. विधिवाचक वाक्य (Affirmative sentence) - जिस वाक्य से किसी क्रिया के सम्पन्न होने का बोध हो, जैसे-

भाई साहब आज प्रयाग चले गए। राम ने खाना खाया। मेरे जाने के बाद ही वह आया था। नीरज को स्कूल गए दो घंटे हो गए। प्रेमदत्त मैथिल ने रामायण पढ़ी। गीता रसोईघर में काम कर रही है। सन् 1947 में हमारा देश स्वतंत्र हुआ।

2. निषेधवाचक वाक्य (Negative Sentence) - जिस वाक्य में किसी पक्ष द्वारा आदेशात्मकता का

बोध हो, जैसे-

जवाहर लाल भार्गव की अदालत में उपस्थित हों। तुम आज ही वहाँ चले जाओ। हरीश को यह काम करना पड़ेगा। भाग जाओ। सीधे घर चले आओ, तुरन्त पत्र लिखना।

4. प्रश्नवाचक वाक्य (Interrogative Sentence) - इस प्रकार के वाक्यों में किसी व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति से कुछ प्रश्न किया जाता है, जैसे-

इसका अर्थ बतलाइए? तुम घर कब जाओगे? तुम्हारी माताजी का क्या नाम है? तुम कब सोते हो? हरीश को आखिर क्या हो गया? तुम कॉलेज क्यों नहीं गए?

तुम अभी तक क्यों सो रहे हो? मैं क्या कर सकता हूँ? तुम्हें क्या रोग है? अन्दर कौन है? तुम्हारे पिताजी क्या करते हैं? क्या आज विद्यालय में अवकाश है?

5. विस्मयादिबोधक वाक्य (Exclamatory Sentence) - जिस वाक्य में कुछ आश्चर्य, शोक, हर्ष आदि के भाव व्यक्त होते हाँ, जैसे- अहा! कैसा सुहाना मौसम है।

वाह वाह! क्या लाजवाब चीज है। अरे! तुम कब आ गए? शाबाश! तुमने खूब अंक प्राप्त किए। हाय! यह क्या हुआ? अरे! तुम असफल हो गए। राम राम! बहुत अनर्थ हो गया। अहा। क्या सुहावना मौसम है। ऐसा नहीं हो सकता नहीं।

6. संदेह वाक्य (Sentence Indicating Doubt) - जिस वाक्य से संभावना, शंका, संदेह आदि अर्थों का बोध हो जैसे-

संभवत: वह आज आए। शायद आज सर्दी पड़े। शायद पिताजी लौट आएँ। शायद आज वर्षा हो। वह अभी पहुँचा भी होगा या नहीं। शायद आज वह आए। वह पढ़ता होगा, लेकिन मुझे क्या पता? रेल दुर्घटना में अपना तो कोई नहीं फँसा? शायद यह सोना शुद्ध हो। हो सकता है पं. मैथिल उनसे मिले हों। उसने बुलाया हो।

7. इच्छा वाचक वाक्य (Illative Sentence) - जिस वाक्य से शुभकामना, सहानुभूति, समर्थन, इच्छा आदि सूचित हों, जैसे-

मैं इसे डॉक्टर बनाऊँगा। भगवान् आपको चिरायु करे। आप प्रसन्न रहिये। प्रभु आपकी कामना पूरी करे। मैं भी वही जा जाऊँगा। तुम यहाँ होते हो क्या अच्छा होता। नीलम को मैं संतुष्ट करूँगा। भगवान् भला करे। दूधों नहाओ पूतों फलो।

8. संकेतवाचक वाक्य (Conditional Sentence) - इस प्रकार के वाक्य में शर्त या संकेत के भाव निहित रहते हैं, जैसे-

वर्षा होती तो मैं बाजरा बोता। तुम खाओ तो मैं संतरे लाऊँ।

यदि नौकरी मिल जाती तो विवाह हो जाता। यदि श्रम करते तो पेट भर लेते। यदि पढ़ते तो पास हो जाते। यदि तुम आ जाओ तो मैं चल सकूँगा। लॉटरी खुल जाती तो मजा आ जाता। यदि वह रूठ गया तो गजब हो जाएगा। मैं मुम्बई गया तो तुम्हारे लिए साड़ी ले आऊँगा। यदि तुम कहो, तो जाऊँ।

वाक्य-भेद एवं विश्लेषण (Types of Sentence & Analysis)

वाक्य भेद : रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार हैं- 1. साधारण व सरल वाक्य, 2. मिश्रवाक्य, 3. संयुक्त वाक्य।

1. साधारण व सरल वाक्य (Simple Sentence) - जिस वाक्य में एक ही क्रिया एवं एक ही कर्ता होता है उसे साधारण व सरल वाक्य कहते हैं इसमें एक ही उद्देश्य एवं एक ही विधेय होता है, जैसे-

राम घर गया। वह पुस्तक पढ़ता है। वह फल खाता है। रमेश फल खाता है। मैं दूध पीता हूं। मैं खाता हूँ। तुम हँसते हो। तुम घर जाते हो। मैं कल जाऊँगा। इनमें कर्ता उद्देश्य तथा क्रिया विधेय रहती है।

2. मिश्रित वाक्य (Complex Sentence) - जिस वाक्यमें कोई अन्य उपवाक्य अथवा अंगवाक्य मिला हो, उसे मिश्रवाक्य कहते हैं। जैसे-

मैं जानता हूँ कि वह अभी आया है। जब मैं उससे मिला तुम वहाँ थे ही नहीं।

इनमें, मैं जानता हूँ, मैंने उसे मारा साधारण वाक्य है तथा कि वह अभी आया है तथा तुम वहाँ थे नहीं अंकवाक्य है, उस प्रकार दोनों के योग से बना यह वाक्य मिश्रवाक्य कहलाता है। मिश्रित वाक्य में संज्ञा उपवाक्य या विशेषण उपवाक्य या क्रिया विशेषण उपवाक्य होते हैं।

3. संयुक्त वाक्य (Compound Sentence) - साधारण तथा मिश्रवाक्यों का मेल जहाँ अव्ययों के माध्यम से होता हो वहाँ संयुक्त वाक्य कहा जाता है। जैसे-

जैसे ही तुम गए वह छत से कूदा और उसके पैर में चोट लग गई तभी मैं उसे लेकर अस्पताल गया फिर डॉक्टर वर्मा के पास ले गया लेकिन वह मिले नहीं। यदि गर्मी पड़ेगी तो हम नहीं आएँगे। छत पर पढ़ो अथवा नीचे जाओ। सत्य बोलो लेकिन कटु सत्य नहीं।

इस प्रकार के वाक्यों में एकाधिक उपवाक्यों का मिश्रण रहता है।

सरल वाक्य का विश्लेषण :

सरल वाक्य के विश्लेषण (वाक्य विग्रह) में निम्नलिखित बातें दिखाते हैं-

1. उद्देश्य, 2. उद्देश्य का विस्तार, 3. निधेय, 4. विधेय का विस्तार। इसके अन्तर्गत कर्म-कर्म का विस्तार, क्रिया तथा क्रिया का विस्तार आदि भाग। उदाहरण-

मिश्र वाक्य (Complex Sentence) - मिश्र वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य होता है तथा अन्य आश्रित-उपवाक्य, आश्रित-उपवाक्य एकाधिक भी हो सकते हैं। आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

1. संज्ञा उपवाक्य (Nominal Clause) - मिश्र वाक्य में यह संज्ञा अथवा संज्ञा पदबन्ध के समान पर आता है। जैसे गणेश कब चाहता था कि उसका बेटा चोर बने।

इस मिश्रित वाक्य में 2 वाक्य हैं- 1. गणेश कब चाहता था- प्रधान उपवाक्य (Principal Clause) 2. कि उसका बेटा चोर बने- संज्ञा उपवाक्य।

2. विशेषण उपवाक्य (Adjective Clause) - जो आश्रित उपवाक्य ((Subordinate Clause) सीधे किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम के माध्यम से किसी संज्ञा की विशेषता प्रकट करे। जैसे- वह व्यक्ति गाँव छोड़कर चला गया, जो व्यवहार में बहुत अच्छा था। इस मिश्रवाक्य में 2 वाक्य हैं- 1. वह व्यक्ति गाँव छोड़कर चला गया- प्रधान उपवाक्य। 2. जो व्यवहार में बहुत अच्छा था- विशेषण उपवाक्य जो सम्बन्धवाचक विशेषण द्वारा प्रधान उपवाक्य से जुड़ा है।

3. क्रिया विशेषण उपवाक्य (Adverb Clause) - जो प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता प्रकट करता है, जैसे जब भी उस बीमार औरत को देखता हूँ, मेरा हृदय करुणा से ओत-प्रोत हो जाता है। जहाँ-जहाँ गाँधी जी गए, वहाँ उनका स्वागत हुआ।

मुख्य/प्रधान उपवाक्य (Principal Clause) : ऊपर दिए गए आश्रित उपवाक्यों के विपरीत कोई ऐसा उपवाक्य जो किसी अन्य के आश्रित नहीं होता प्रधान उपवाक्य कहलाता है। प्रधान उपवाक्य के पूरक के रूप में संज्ञा विशेषण तथा क्रिया विशेषण उपवाक्य होते हैं, जैसे- वह पुस्तक रामचरित मानस है, जिसकी तुम इतनी प्रशंसा कर रहे हो, मेरे परिश्रम का उद्देश्य है कि मैं प्रथम श्रेणी प्राप्त कर सकूँ।

मिश्रवाक्य : मिश्र वाक्य का विश्लेषण इस प्रकार किया जाता है-

1. उद्देश्य 2. उद्देश्य का विस्तार, 3. योजक 4. विधेय में क्रिया, 5. क्रिया का विस्तार, 6. पूरक 7. कर्म, 8 कर्म का विस्तार

उदाहरण-1. जो व्यक्ति ईमानदार होता है, उसका सभी आदर करते हैं। 2. उसने कहा कि मेरे चाचा को दो वर्ष का कारावास हो गया।

संयुक्त वाक्य का विश्लेषण :

इस विश्लेषण का रूप लगभग मिश्र वाक्य जैसा ही होता है, वही रीति होता है। इसमें पहले प्रधान तथा मिश्रित वाक्य अलग-अलग छाँट कर लिख लिए जाते हैं। योजक तथा समुच्चय बोधक अव्यय की निर्देश साथ-साथ कर लिया जाता है, इसके

अध्याहार :

कुछ वाक्यों में बहुत से ऐसे शब्दों को छोड़ दिया जाता है, जिनके प्रयुक्त न होने से वाक्यार्थ में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती। इस प्रक्रिया को अध्याहार कहते हैं।

अध्याहार के प्रयोग से भाषा अधिक समर्थ हो उठती है। काव्यांश तथा मुहावरों में इसका अधिक प्रयोग होता है।

'वह हिरण हो गया' अर्थात् वह हिरण की तरह तेजी से भाग गया। इस वाक्य के 'की तरह तेजी से' वाक्यांश के लोप को ही अध्याहार कह सकते हैं।

इस प्रकार के वाक्य दो तरह के होते हैं-

1. संकुचित, 2. संक्षिप्त

1. जब वाक्य में प्रथम बन्द में जो अभिप्राय स्पष्ट हो जाता है उसे साथ के उपवाक्य अथवा अंगवाक्य में दुहराया नहीं जाता। जैसे-

तुमने उसे मारा और भाग गए।

अन्तिम उपवाक्य 'और भाग गए' का अर्थ है 'और तुम उसे मारकर भाग' गए। इसमें अनेक उद्देश्य के लिए एक विधेय का जब प्रयोग होता है-

वह इतना बहादुर है जितना दारासिंह

वहाँ एक चाकू और एक चप्पल मिली।

कभी-कभी प्रश्नोत्तर में प्रश्नवाक्यार्थ को नहीं दुहराया जाता, क्या तुम बम्बई से आ रहे हो? नहीं। तुमने चित्रलेखा उपन्यास पढ़ा है? हाँ, पढ़ा है।

2. संक्षिप्त-ऐसे वाक्य में व्याकरणिक दृष्टि से आवश्यक शब्द छोड़ दिए जाते हैं। जैसे- 1. दुलत्ती मारी - गधे ने दुलत्ती मारी

वाक्य रचना के साधारण नियम

वाक्य को व्यवस्थित क्रम में रखने के लिए कुछ सामान्य नियम है। व्याकरण की दृष्टि से वाक्य के संयत रूप को पदक्रम कहा जाता है।

वाक्य को शुद्ध बनाने के लिए क्रम अन्वय तथा प्रयोग सम्बन्धी कुछ नियम ध्यातव्य हैं-

1. क्रम (Order) :

वाक्य का व्याकरण सम्मत क्रम इस प्रकार होना चाहिए-

(अ) आरम्भ में कर्ता, मध्य में कर्म तथा सबसे अन्त में क्रिया होती है।

जैसे- नीरज पुस्तक पढ़ता है। वह घर गया।

कर्ता - नीरज, वह,। कर्म-पुस्तक घर। क्रिया-पढ़ता है, गया।

(इ) कर्ता से पहले कर्ता का विस्तार आता है, इसमें विशेषण का कर्ता से पहले प्रयोग होता है। जैसे- सुन्दर लड़की नाच रही थी। श्वेत घोड़ा दौड़ रहा है।

क्रिया से पहले क्रिया-विस्तार अथवा विधेय रखा जाता है, जैसे-

वह रो-रो कर कह रहा था। वह खाकर सो गया।

(उ) कर्ता और कर्म के मध्य में कारक अपने क्रम से आते हैं, जैसे-

मोहन ने स्कूल में टेबिल से लिखने के लिए हाथ में नोटबुक उठाई।

(ए) विस्मयादिबोधक तथा सम्बोधन सबसे पहले आता है, जैसे-

अरे! यहाँ आओ। अरे! तुम इधर कैसे? अहा! क्या कहना? मोहन! तुम चले ही जाओ।

(च) क्रिया विशेषण कर्ता-विशेषण की भाँति क्रिया से पहले प्रयुक्त होता है- वह बहुत खाता है। नीरज कम पढ़ता है। तुम सुस्त रहते हो।

(छ) प्रश्नवाचक शब्द क्रिया से पहले प्रयुक्त होता है तथा 'हाँ, न' के उत्तर वाले प्रश्नवाचक वाक्य

के 'कदर' पहले जुड़ेगा।

तुम यहाँ कैसे आए? वह क्यों नहीं आया? क्या तुम खाओगे? तुम कौन हो? क्या तुम छात्र हो? क्या तुमने दूध पी लिया?

प्रश्नवाचक अथवा कोई सर्वनाम विशेषण रूप में प्रयुक्त हो तो वे संज्ञा से पूर्व ही आएँगे, जैसे- कौन बालक आया है? यहाँ कितनी पुस्तकें हैं?

प्रश्न पूछा जाता है, जैसे-क्या, हरि आ गया?

अन्वय (Co-Ordination) :

वाक्य की क्रम-संगति अथवा शब्दों के ताल-मेल को अनव्य कहते हैं।

इसमें लिंग, वचन, पुरुष और काल का एक-दूसरे से ताल-मेल ठीक बैठाया जाता है। स्त्रीलिंग कर्ता के लिए पुल्लिंग क्रिया रूप का प्रयोग नहीं हो सकता। इसी प्रकार बहुवचन संज्ञा के लिए एकवचन की क्रिया का प्रयोग असंगत है।

इसमें क्रिया और कर्ता का तालमेल विशेष रूप से संतुलित रखा जाता है। जैसे-

कर्ता यदि कारक रहित है तो क्रिया के वचन, लिंग, पुरुष कर्ता के अनुरूप ही प्रयुक्त होते हैं, जैसे-

नीरज आ रहा है। वह खा रहा है। पंकज पानी पी रहा है। राम हँस रहा है। उमा रो रही है। गीता लिख रही है। वे चले जा रहे हैं। पवनकुमार आ रहा है।

यदि वाक्य में कारक रहित एकाधिक कर्ता हो तथा अन्तिम कर्ता से पहले और तथा एवं संयोजक लगा हो तो क्रिया उसी लिंग और वचन के अनुसार बहुवचन में प्रयुक्त होती है। इसके लिए यह आवश्यक है कि प्रयुक्त सभी कारक रहित कर्ता एक ही लिंग वचन तथा पुरुष के हों, यथा-

हरीश, नीरज तथा पंकज आते हैं। पुष्पा, मधु, पप्पी और ज्योति आती हैं।

यदि वाक्य में प्रयुक्त दो कर्ता भिन्न लिंग के हों और द्वन्द्व समास के रूप में उनका प्रयोग होता हो तो उनकी क्रिया पुल्लिंग बहुवचन होंगी, जैसे-

शिव-पार्वती प्रसन्न हुए। माता-पिता खुश हो गए। कुत्ते-बिल्ली लड़ रहे थे। स्त्री-पुरुष जा रहे थे।

यदि भिन्न लिंगी एक वचन कर्ता एकाधिक हो तथा अन्तिम कर्ता से पहले 'और' संयोजक लग रहा हो तो क्रिया का रूप पुल्लिंग बहुवचन ही होगा, जैसे-

सीता और राम वन के लिए प्रस्थान करते हैं। गीता और रमेश दिल्ली जा रहे हैं। अंशु और रेखा अभी तक नहीं आए।

यदि अनेक कर्ता भिन्न लिंग वचन, भिन्न पुरुष के हों तो क्रिया बहुवचन होंगी किन्तु क्रिया का लिंग अन्तिम कर्ता के अनुरूप होगा, जैसे-

राम, मदन और लड़कियाँ आ रही हैं। एक लड़का दो सिपाही तथा चार स्त्रियाँ जा रही थीं।

कुछ अन्य ध्यातव्य बातें :

जब किसी बात पर अधिक जोर दिया जाता है तो उसे बार-बार दुहराया जाता है, जैसे-

मैं आऊँगा, आऊँगा, आऊँगा। हों, हों, हों तुम्हें जाना होगा। नहीं, नहीं, नहीं। मैंने कह दिया मुझे नहीं करना है। झूठ, झूठ, बिल्कुल झूठ।

किसी विशेष बात को स्पष्ट रूप से न कहना हो और मात्र संकेत करना हो तो हाईफन लगाकर वाक्य अधूरा छोड़ दिया जाता है, जैसे-

अगर तुम न आए तो... या तो चीज मुझे दो अन्यथा...

अगर किसी बात पर विशेष ध्यान दिलाना हो और लेखन समाप्ति पर भी कुछ कहना शेष तो पुनश्च लिखकर आगे बात कही या दुहराई जा सकती है, जैसे-

पुनश्च, आप को यहाँ अवश्य आना है।

अप्रचलित तथा क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग त्याज्य है।

निरर्थक शब्दों का भी प्रयोग नहीं करना चाहिए।

वाक्य में पूर्वापर सम्बन्ध बनाए रखना चाहिए।

शिष्ट और श्लील शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। आदेशात्मक निर्देश भी सभ्यतानुरूप दिए जाने चाहिए।

वाक्य परिवर्तन/वाक्यांतरण (Transforming of Sentences) :

वाक्य के प्रकार को दूसरे प्रकार में परिवर्तित करने को वाक्यान्तरण कहते हैं। वाक्य परिवर्तन के समय यह विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वाक्य का अर्थ न बदलने पाए।

विधिसूचक से निषेधवाचक वाक्य बनाना :

वह आदमी ईमानदार है- वह आदमी बेईमान नहीं है। वह बहुत खाता है- वह कम खाता है। कालू अशिक्षित है- कालू पढ़ा-लिखा नहीं है। राजू अकर्मण्य है- राजू कोई काम नहीं करता। गीता खाना बनाएगी- गीता खाना नहीं बनाएगी।

निश्चयवाचक से प्रश्नवाचक तथा प्रश्नवाचक से निश्चयवाचक :

उसे अब क्या करना है? उसे अब कुछ नहीं करना है। अब क्या मैं वहाँ जाए बिना रह सकता हूँ। गाँधी जी को कौन नहीं जानता? गाँधी जी को सब जानते हैं। चाचा 'जी कल आएँगे?' क्या चाचा जी कल आएँगे? वे मिलकर नहीं खेलेंगे-क्या वे मिलकर नहीं खेलेंगे?

विस्मयादि बोधक वाक्य से सामान्य वाक्य :

ओह! इतना काला!- वह बहुत काला है। अरे! यह क्या हुआ!- यह बहुत आश्चर्यजनक है। वाह! कितना सुन्दर विद्यालय है- बहुत सुन्दर विद्यालय है।

वाच्यान्तरण :

उससे यह किया नहीं जा सकता-वह यह नहीं कर सकता। तुमसे यह नहीं निभा? जा सकता-तुम इसे नहीं निभा पाए। तुमसे लड्डू खाए नहीं जा सकते-तुम लड्डू खा नहीं सकते। मैं आम नहीं खाता- मुझसे आम नहीं खाया जाता। हामिद ने पेन खरीदा-हामिद के द्वारा पेन खरीदा गया। मैं चाय नहीं पीता-मुझसे चाय नहीं पी जाती। वह नहीं दौड़ा-उससे दौड़ा नहीं गया। उसने अनेक आतंकवादियों को मारा-उसके द्वारा अनेक आतंकवादी मारे गये।

मिश्र वाक्य से सरल वाक्य :

जो व्यक्ति मेहनत से घबड़ाते हैं, सफल नहीं होते। मेहनत से घबड़ाने वाले व्यक्ति सफल नहीं होते। वह इसलिए पढ़ता है कि पास हो जाए। वह पास होने के लिए पढ़ता है। सोहन डॉक्टर साहब के यहाँ पढ़ने गया क्योंकि उसे अँग्रेजी पढ़नी है। सोहन अँग्रेजी पढ़ने के लिए डॉक्टर साहब के यहाँ गया है। मैंने एक छात्र को देखा जो बीमार था- मैंने एक बीमार छात्र को देखा।

संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य :

(1) **संयुक्त :** रात हुई और गहरा अँधेरा छा गया।
सरल : रात होने पर अँधेरा छा गया।

(2) **संयुक्त :** लड़ाई हुई और वह मारा गया।
सरल : वह लड़ाई में मारा गया।

(3) **संयुक्त :** अध्यापक चला गया और लड़के कूदने लगे।
सरल : अध्यापक के चले जाने पर लड़के कूदने लगे।

(4) **संयुक्त :** वह घर आया और माता जी से मिला।
सरल : वह घर आकर माता-जी से मिला।
संयुक्त : उसने माँगा था और उसे मिल गया।
मिश्र : उसने जो माँगा था, उसे मिल गया
संयुक्त : रमेश ने मुझे देखा और घबरा गया

मिश्र : जब रमेश ने मुझे देखा तो वह घबरा गया।

वाक्य-संश्लेषण (Sythesis) :

वाक्य-संश्लेषण का अर्थ है कि दो या दो से अधिक वाक्यों का एक वाक्य बनाना। मूलवाक्य सरल वाक्य होते हैं, एक से अधिक सरल वाक्यों से सरल वाक्य, मिश्र वाक्य तथा संयुक्त वाक्य बनाए जा सकते हैं, जैसे-

(क) सरल से सरल वाक्य :

राम आया। लक्ष्मण आया। भरत आया। राम, लक्ष्मण और भरत आए। सुरेश खेल रहा था, रमेश खेल रहा था, गणेश खेल रहा था। सुरेश, रमेश और गणेश खेल रहे थे। सुशील विद्यालय से घर आया, उसने बस्ता रखा, पानी पिया, सीटी बजाई, सुशील खेलने चला गया। सुशील विद्यालय से घर आते ही बस्ता रखकर, पानी पीकर सीटी बजाते हुए खेलने चला गया।

(ख) सरल से मिश्र वाक्य :

तुमने किया था। फल मिल गया है। जैसा जो तुमने किया था, फल मिल गया है। उसने शास्त्र पढ़ें हैं। वह विद्वान है। वह शास्त्रार्थ में हार गया। जो शास्त्रपणि विद्वान है, वह शास्त्रार्थ में हार गया। बिहार में एक गाँव था, गाँव बड़ा था वह चारों ओर से जंगल से घिरा था। जंगल घना था, उस गाँव में कुछ आदिवासी रहते थे। बिहार में चारों ओर से घने जंगल से घिरा एक बड़ा गाँव था, जिसमें कुछ आदिवासी रहते थे।

(ग) सरल से संयुक्त वाक्य :

घण्टी बजी। छुट्टी हुई। बच्चे घर गए। छुट्टी होने पर घण्टी बजी और बच्चे घर गए। घण्टी बजते ही छुट्टी हुई और बच्चे घर गए। हमारे विद्यालय में उत्सव था। उत्सव वार्षिक था, उत्सव में अनेक विद्वान पधारे, उत्सव में कुछ विद्वान धर्म पर बोले, कुछ ने विज्ञान पर भाषण दिया। विद्यालय के वार्षिकोत्सव में अनेक विद्वान पधारे और वे धर्म तथा विज्ञान पर बोले।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए।

(1) उद्देश्य किसे कहते हैं?

(2) विधेय किसे कहते हैं?

(3) निषेधवाचक वाक्य किसे कहते हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में दीजिए।

(1) प्रश्नवाचक वाक्य किसे कहते हैं?

(2) मिश्र वाक्य किसे कहते हैं?

(3) संयुक्त वाक्य किसे कहते हैं?

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्ति : वाक्य के प्रकारों के अनुसार वाक्य संकलित कीजिए।

(2) शिक्षक प्रवृत्ति : विद्यार्थियों को वाक्यों के प्रकारों के संबंध में एक चार्ट बनाने हेतु प्रेरित कीजिए।

व्याकरण : वाक्य अशुद्धि शोधन

वाक्य रचना हेतु हिन्दी व्याकरण में कुछ नियम हैं। उन नियमों पर ध्यान न देने से वाक्य-रचना अशुद्ध होती है। वाक्य रचना विषयक अशुद्धियाँ निम्नलिखित हैं-

1. पद-क्रम सम्बन्धी, अशुद्धियाँ
2. अन्विति या संगति सम्बन्धी अशुद्धियाँ
3. वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ
4. लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ
5. कारक सम्बन्धी अशुद्धियाँ
6. द्विरुक्ति सम्बन्धी अशुद्धियाँ
7. वाच्य सम्बन्धी अशुद्धियाँ
8. अनुपयुक्त शब्द प्रयोग सम्बन्धी अशुद्धियाँ

1. पद क्रम सम्बन्धी अशुद्धियाँ

वाक्य में शब्दों का एक निश्चित क्रम होता है। हिन्दी वाक्य रचना के अनुसार पदों का क्रम निम्न प्रकार होना चाहिए-

1. कर्ता, 2. कर्म, 3. क्रिया।

जैसे- 'वह खाना रहा है' वाक्य में 'वह' 'कर्ता', 'खाना' 'कर्म' तथा 'खा रहा है' 'क्रिया' है। इस पदक्रम को यदि हम 'खा' रहा है वह खाना।' इस प्रकार लिखें तो अशुद्ध होगा।

कर्ता, कर्म तथा क्रिया के विशेषणों का प्रयोग उनसे पूर्व ही किया जाता है, यथा- ''वह रुचिकर खाना धीरे-धीरे खा रहा है।''

पदक्रम-सम्बन्धी अशुद्धियों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित प्रकार हैं-

1.	पाठ तुमको अभी तक हुआ नहीं है याद क्या?	(अशुद्ध)
	क्या तुमको पाठ अभी तक याद नहीं हुआ है?	(शुद्ध)
2.	मैंने उत्तर दिया जब उसने पूछा तो मुझे।	(अशुद्ध)
	जब उसने मुझे पूछा तो मैंने उत्तर दिया।	(शुद्ध)
3.	उसने एक फूल की माला खरीदी।	(अशुद्ध)
	उसने फूलों की एक माला खरीदी।	(शुद्ध)
4.	बहुत से यूनान के विद्वान यहाँ आए हैं।	(अशुद्ध)
	यूनान के बहुत से विद्वान यहाँ आए हैं।	(शुद्ध)
5.	ज्ञात है तुम्हें मोहन का पता गाँव का क्या।	(अशुद्ध)
	क्या तुम्हें मोहन का गाँव का पता ज्ञात है।	(शुद्ध)
6.	चल रहा है धीरे-धीरे वह	(अशुद्ध)
	वह धीरे-धीरे चल रहा है।	(शुद्ध)

'अन्विति' संगति या सही मेल होता है। वाक्य में प्रयुक्त पदों की परस्पर संगति स्थापित करना ही अन्विति है। इस अन्विति के अनेक रूप होते हैं, यथा-

(क) कर्ता एवं क्रिया की अन्विति : जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है कि कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार ही क्रिया का लिंग एवं वचन निश्चित होते हैं, जैसे-

राधा पढ़ती है। यहाँ राधा स्त्रीलिंग है, अतः क्रिया भी स्त्रीलिंग की प्रयुक्त हुई है। यथा-

1. घोड़ा दौड़ता है — 2. गाय दौड़ती है। (लिंग सम्बन्धी अन्विति)

1. घोड़े दौड़ते हैं — 2. गायें दौड़ती हैं। (वचन सम्बन्धी अन्विति)

विशेष-1. जब कर्ता के साथ 'ने' कारक चिह्न जुड़ा होता है, तो क्रिया का लिंग और वचन कर्म के अनुसार निश्चित होता है, यथा- उसने पुस्तक पढ़ी। यहाँ पुस्तक में क्रिया का लिंग 'पुस्तक' के आधार पर स्त्रीलिंग रखा गया है। जैसे-

1. रघु ने पत्र पढ़ा। — 2. रघु ने पुस्तकें पढ़ीं।

2. यदि दो कर्ताओं में से एक मध्यम पुरुष का हो तो मध्यम पुरुष, बहुवचन की ही क्रिया प्रयुक्त होगी, यथा-

1. तुम और मैं कल चलेंगे। — 2. तुम और कल्याण कब जाओगे?

3. यदि दो कर्ता अथवा दो से जुड़े हों, तो अन्तिम कर्ता के अनुसार क्रिया का वचन और पुरुष निश्चित होगा यथा-

1. लड़का या लड़की जाएगी। — 2. स्त्रियाँ या लड़के बैठेंगे।

4. कर्ता के प्रति आदर व्यक्त करने के लिए, एक वचन कर्ता के साथ ही बहुवचन की क्रिया का प्रयोग किया जाता है, जैसे- चाचाजी आ रहे हैं। (चाचाजी-एकवचन, आ रहे हैं-बहुवचन)

(ख) पुरुष के अनुसार कर्ताओं की अन्विति : यदि किसी वाक्य में विभिन्न पुरुषों के एक से अधिक कर्ताओं का प्रयोग हो, तो उनको निश्चित क्रम में रखा जाता है। पहले मध्यम पुरुष फिर अन्य पुरुष और अन्त में उत्तम पुरुष का प्रयोग होना चाहिए, जैसे-

1. तुम और गणेश कहाँ जा रहे हो? — 2. तुम, श्याम और मैं घूमने जाएँगे।

(ग) विशेष्य तथा विशेषण की अन्वति : विशेषण का लिंग और वचन अपने विशेष्य के अनुसार होता है, यथा-

अच्छा लड़का	(दोनों पुल्लिंग, एकवचन)
अच्छे लड़के	(दोनों पुल्लिंग, बहुवचन)
अच्छी बालिका	(दोनों स्त्रीलिंग, एकवचन)
अच्छी बालिकाएँ	(दोनों स्त्रीलिंग, बहुवचन)

बोलचाल में अच्छी एक वचन ही बोलते हैं।

(घ) संज्ञा और सर्वनाम की अन्विति : वाक्य में किसी सर्वनाम का प्रयोग जिस संज्ञा के स्थान पर है, उसी के लिंगविषयक अशुद्धियों के आप उदाहरण अनुसार उसके लिए और वचन निश्चित होते हैं, यथा-

1. चोर भागा क्योंकि वह चोरी कर रहा था। (अशुद्ध)
2. बालिकाओं ने कहा कि वे घूमने जा रही हैं। (शुद्ध)

वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ

हिन्दी में दो वचन होते हैं, एकवचन तथा बहुवचन। एक संख्या का बोध करानेवाला शब्द एकवचन तथा एक सर्वनाम का सही वचन में प्रयोग न करना वचन सम्बन्धी अशुद्धि मानी जाती हैं, यथा-

1. तीन घटना घटित हुईं। (अशुद्ध)
   तीन घटनाएँ घटित हुईं। (शुद्ध)
2. अच्छे लड़का झूठ नहीं बोलते। (अशुद्ध)
   अच्छे लड़के झूठ नहीं बोलते। (शुद्ध)

3. लड़कियों ने कहा कि वह कमरे में बैठेंगी। (अशुद्ध)
लड़कियों ने कहा कि वे कमरे में बैठेंगी। (शुद्ध)
4. उसका प्राण निकल गया। (अशुद्ध)
उसके प्राण निकल गए। (शुद्ध)
5. आपका दर्शन हो गया। (अशुद्ध)
आपके दर्शन हो गए। (शुद्ध)

4. लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ

क्रिया का लिंग कर्ता के अनुसार होता है, यथा-

1. लड़का जाता है। 2. लड़की जाती है।

कभी-कभी ईकरान्त संज्ञाओं को भ्रमवश स्त्रीलिंग समझ लिया जाता है और क्रियापद में अशुद्ध लिंग का प्रयोग किया जाता है, यथा-

1. उसने मीठी दही खाई। (अशुद्ध)
उसने मीठा दहीं खाया। (शुद्ध)
2. हाथी जाती है। (अशुद्ध)
हाथी जाता है। (शुद्ध)
3. मैंने तकिया लगाई। (अशुद्ध)
मैंने तकिया लगाया। (शुद्ध)
4. उसने गाजर काटा। (अशुद्ध)
उसने गाजर काटी। (शुद्ध)
5. लड़कों ने मैच देखी। (अशुद्ध)
लड़कों ने मैच देखा। (शुद्ध)
6. उसने करवट बदला। (अशुद्ध)
उसने करवट बदली। (शुद्ध)

सर्वनाम का लिंग उससे सम्बन्धित संज्ञा के अनुसार होता है, यथा-

1. मेरा घर।
2. मेरी पुस्तक।
3. उसकी छाती फूल गयी।
4. मेरा टखना टूट गया।

विशेषण विशेष्य :

1. वह विद्वान महिला है। (अशुद्ध)
वह विदूषी महिला है। (शुद्ध)
2. पुत्री पराया धन होता है। (अशुद्ध)
पुत्री पराया धन होती है। (शुद्ध)
3. साफी सूख गया। (अशुद्ध)
साफी खूब गई। (शुद्ध)
4. यह प्रणाली बदलता है। (अशुद्ध)
यह प्रणाली बदलती है। (शुद्ध)

5. कुएँ का पानी खारी है। (अशुद्ध)
कुएँ का पानी खारा है। (शुद्ध)
6. भोजन व्यवस्था गड़बड़ा गया। (अशुद्ध)
भोजन व्यवस्था गड़बड़ा गई। (शुद्ध)

5. कारक सम्बन्धी अशुद्धियाँ

कारक चिह्नों के प्रयोग में भी अशुद्धियाँ देखी जाती हैं। कर्ता कारक के चिह्न 'ने' का प्रयोग पंजाबी भाषी लोग अशुद्ध रूप में करते हैं, यथा-

1. मैंने नहीं जाना हैं। (अशुद्ध)
मुझे नहीं जाना है। (शुद्ध)
2. लल्लू पपीता खाया। (अशुद्ध)
लल्लू ने पपीता खाया। (शुद्ध)
3. नरेश खाना खाया। (अशुद्ध)
नरेश ने खाया खाया। (शुद्ध)

अकर्मक क्रियाओं के साथ कर्ता कारक का चिह्न 'ने' प्रयुक्त नहीं होता, यथा-

1. बच्चों ने नहीं सोया। (अशुद्ध)
बच्चे नहीं सोए। (शुद्ध)
2. स्त्रियों ने नहीं हँसा। (अशुद्ध)
स्त्रियाँ नहीं हँसी। (शुद्ध)
3. मैंने नहाया। (अशुद्ध)
मैं नहाया। (शुद्ध)

कर्मकारक के चिह्न 'को' का प्रयोग सम्प्रदान कारक के लिए करना अशुद्ध है, यथा-

1. मैं ये पुस्तकें राम को लाया हूँ। (अशुद्ध)
मैं ये पुस्तकें राम के लिए लाया हूँ। (शुद्ध)
2. प्रशासन ने व्यवस्था सुधारने को कदम उठाया। (अशुद्ध)
प्रशासन ने व्यवस्था सुधारने के लिए कदम उठाया। (शुद्ध)

अन्य उदाहरण :

1. वह पेन के साथ लिखता है। (अशुद्ध)
वह पेन से लिखता है। (शुद्ध)
2. मुझे कहा गया है। (अशुद्ध)
मुझसे कहा गया है। (शुद्ध)
3. पुस्तक के अन्दर सौ पृष्ठ हैं। (अशुद्ध)
पुस्तक में सौ पृष्ठ हैं। (शुद्ध)
4. मैं भगवान् के सहारे पर जीवित हूँ। (अशुद्ध)
मैं भगवान् के सहारे जीवित हूँ। (शुद्ध)
5. उससे जाकर के कहना। (अशुद्ध)
उससे जाकर कहना। (शुद्ध)
6. हाथी की एक सूँड़ होती है। (अशुद्ध)

हाथी के एक सूँड़ होती है। (शुद्ध)

6. द्विरुक्त सम्बन्धी अशुद्धियाँ

एक ही अर्थ वाले दो शब्दों का प्रयोग 'द्विरुक्त' कहा जाता है। जिसको वाक्य में आवश्यक रूप से प्रयोग कर दिया जाता है, द्विरुक्ति का प्रयोग अशुद्ध है, जैसे-

1.	वह यहीं से वापस लौटकर आएगा।	(अशुद्ध)
	वह यहीं से लौटकर आएगा।	(शुद्ध)
अथवा	वह यही वापस आएगा।	(शुद्ध)
2.	स्थान केवल मात्र महिलाओं के लिए सुरक्षित है।	(अशुद्ध)
	स्थान केवल महिलाओं के लिए सुरक्षित है।	(शुद्ध)
अथवा	स्थान मात्र महिलाओं के लिए सुरक्षित है।	(शुद्ध)
3.	कामपाल सबसे श्रेष्ठतम छात्र है।	(अशुद्ध)
	कामपाल श्रेष्ठतम छात्र है।	(शुद्ध)
4.	वह गाँधी कैप टोपी पहने है।	(अशुद्ध)
	वह गाँधी टोपी पहने हैं।	(शुद्ध)
5.	सज्जन पुरुष सबका भला करते हैं।	(अशुद्ध)
	सज्जन सबका भला करते हैं।	(शुद्ध)
6.	वह विलाप करता हुआ रोने लगा।	(अशुद्ध)
	वह विलाप करने लगा।	(शुद्ध)
7.	मिस कुमारी मालती आई हैं।	(अशुद्ध)
	मिस मालती आई हैं।	(शुद्ध)
अथवा	कुमारी मालती आई हैं।	(शुद्ध)
8.	वह समय का अच्छा सदुपयोग करता है।	(अशुद्ध)
	वह समय का सदुपयोग करता है।	(शुद्ध)
9.	लोकसभा के अधिकांश सदस्य अनुपस्थित थे।	(अशुद्ध)
	लोकसभा के अधिकतर सदस्य अनुपस्थित थे।	(शुद्ध)

वाच्य सम्बन्धी अशुद्धियाँ

वाक्य कर्ता-प्रधान तथा कर्म-प्रधान दो प्रकार के होते हैं। कर्ता-प्रधान को कर्तवाच्य और कर्म-प्रधान को कर्मवाच्य कहते हैं। वाक्य को कर्तवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तित करते समय क्रिया सम्बन्धी अशुद्धि हो जाती है, यथा-

1.	प्रस्तुत पद्यांश 'जयद्रथ वध' कविता से लिया है।	(अशुद्ध)
	प्रस्तुत पद्यांश 'जयद्रथ वध' कविता से लिया गया है।	(शुद्ध)
2.	यह कार्य बच्चों से किया गया है।	(अशुद्ध)
	यह कार्य बच्चों द्वारा किया गया है।	(शुद्ध)

शब्द रचना से सम्बन्धित अशुद्धियाँ

1. वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ : किसी शब्द में स्वर एवं व्यंजन वर्णों के शुद्ध क्रम को वर्तनी कहते हैं, जैसे-

'नगर' शब्द में न, ग तथा र वर्ण इसकी वर्तनी है। यदि इन वर्णों या इनके स्वर (मात्रा) में परिवर्तन

होगा, तो वह वर्तनी की अशुद्धि मानी जाएगी।

'नगर' को नग्र लिखना वर्तनी की अशुद्धि है। इसी प्रकार कारण को कारन, कविता को कबिता आदि लिखना वर्तनी की अशुद्धि होती है। यह पूर्व में लिखा जा चुका है।

वर्तनी सम्बन्धी प्रमुख नियम निम्न प्रकार हैं-

1. खड़ी पाई। वाले व्यंजनों से संयुक्त अक्षर बनाते समय उनके पाई हटाकर संयुक्त रूप बनाना चाहिए न कि हलंत का प्रयोग करके, जैसे-

कच्चा (शुद्ध)	कच्चा (अशुद्ध)
विघ्न (शुद्ध)	विघ्न (अशुद्ध)
कुत्ता (शुद्ध)	कुत्ता (अशुद्ध)
शय्या (शुद्ध)	शय्या (अशुद्ध)

2. 'क' तथा 'फ' से बनने वाले संयुक्त वर्ण 'पक्का' तथा 'रफ्तार' की भाँति बनाने चाहिए। न कि पक्का की तरह।

3. ट, ड, द तथा ड़ आदि से संयुक्त वर्ण इन पर हलंत लगाकर बनाए जाएँ, यथा - पट्टी, गट्ठर, गड्ढ़ा, गद्दा।

4. 'र' से बनने वाले संयुक्त रूप तीन प्रकार से लिखे जाते हैं-

प् + र = प्र (प्रकार)	र् + क = र्क (अर्क)
क् + र = क्र (क्रम)	ट् + र = ट्र (राष्ट्र)

श्र को श लिखना अशुद्ध माना गया है, यथा-

श्रीमान शुद्ध है न कि शीमान

5. ऋ से संयुक्ताक्षर बनाते समय ऋ को वर्ण के नीचे जोड़ना चाहिए, जैसे-

वृष्टि, सृष्टि कृष्ण (शुद्ध)

व्रिष्टि, स्त्रिष्टि, क्रिष्ण (अशुद्ध)

6. श, ष तथा स के प्रयोग में अशुद्धि, जैसे-

शुद्ध	**अशुद्ध**
विशाल	विसाल
विषम	विशम या विराम
प्रसाद	प्रशाद

'ष' वर्ण के योग से बनने वाले शब्द हिन्दी में बहुत थोड़े हैं, उनको याद रखा जा सकता है, यथा- काषाय, कृषक, विषम, विष, कृषि, कृष्ण, ऋषि आदि।

ष वर्ण से प्रारम्भ होने वाले शब्द भी हिन्दी में गिने-चुने हैं, यथा-

षट्कोण, षडानन, षड्यन्त्र आदि।

अनुपयुक्त शब्द प्रयोग विषयक अशुद्धियाँ

प्रकरण प्रसंगादि की दृष्टि से अनुपयुक्त एवं अशुद्ध शब्द प्रयोग से इस प्रकार की अशुद्धियों निम्नस्तर होती है जैसे-

1.	पूज्यनीय पिताजी आ गए।	(अशुद्ध)
	पूज्य पिताजी आ गए।	(शुद्ध)
2.	सौभाग्यवती लता का विवाह हो गया।	(अशुद्ध)
	सौभाग्य कांक्षिणी लता का विवाह हो गया।	(शुद्ध)

3.	उसने बैठकर आसन ग्रहण किया।	(अशुद्ध)
	उसने आसन ग्रहण किया।	(शुद्ध)
4.	उसे उत्तीर्ण होने की आशंका है।	(अशुद्ध)
	उसे उत्तीर्ण होने की आशा है।	(शुद्ध)
5.	वह आप से श्रद्धा करता है।	(अशुद्ध)
	वह आपके प्रति श्रद्धा रखता है।	(शुद्ध)
6.	आज बेशुमार गर्मी है।	(अशुद्ध)
	आज बेहद गर्मी है।	(शुद्ध)
7.	उसकी आयु तिथि क्या है?	(अशुद्ध)
	उसकी जन्मतिथि क्या है?	(शुद्ध)

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :

(1) पदक्रम संबंधी अशुद्धियाँ बताइए।

(2) अन्विति संबंधी अशुद्धियाँ बताइए।

(3) वचन संबंधी अशुद्धियाँ लिखिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में दीजिए :

(1) लिंग संबंधी अशुद्धियाँ बताइए।

(2) कारक संबंधी अशुद्धियाँ बताइए।

(3) द्विरुक्ति संबंधी अशुद्धियाँ बताइए।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः अपने साथी विद्यार्थियों की भाषागत अशुद्धियों की सूची बनाइए तथा सही वाक्य प्रस्तावित कीजिए।

(2) शिक्षक प्रवृत्तिः विद्यार्थियों को अशुद्धि रहित भाषा प्रयोग की ओर प्रेरित करने के लिए कुछ नमूने उनके सामने रखिए।

⊙

व्याकरण : विराम चिह्न

जिन चिह्नों का वाक्यों में रुकने, ठहरने के लिए प्रयोग होता है, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं। विराम चिह्न एक प्रकार का शब्दानुशासन ही है। विराम चिह्नों के द्वारा वाक्य अपने सुष्ठु और परिष्कृत रूप में प्रस्तुत होते हैं।

विराम शब्द का अर्थ है ठहरना, रुकना। उच्चारण की दृष्टि से वाक्य को अनेक उपखण्डों में विभाजित किया जाता है। इन उपखण्डों के विराम चिह्नों को ही विराम कहते हैं। ये पाठकों के भाव बोध को सरल बनाते हैं, इनसे भाव एवं विचार की स्पष्टता बढ़ती है, वाक्य गठन सौन्दर्य बढ़ता है तथा भावाभिव्यक्ति सुचारु होती है, ये एक प्रकार के विशेष ठहरावस्थल हैं।

विराम चिह्नों की जरा-सी त्रुटि से ही वाक्यार्थ में अन्तर पड़ जाता है।

उन्नीसवीं शताब्दी से पहले हिन्दी में विराम चिह्नों का प्रयोग नहीं होता था। अठारहवीं शताब्दी के बाद तक तो शब्द को भी पृथक-पृथक रूप से नहीं लिखा जाता था, इसमें शब्दों के खण्ड करने में दुरूहता उत्पन्न हो जाती थी। अठारहवीं शताब्दी के बाद तक इस प्रकार की लेखन शैली प्रयुक्त होती थी, यथा-

''या प्रकार भगवान् भास्कर को नमस्कार करके सब श्रद्धालु भक्तों ने परसाद ग्रहण किया और मन्दिर की ओर सीधा दर्शन कर उसी प्रकार नीचे चले गए।''

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब खड़ी बोली ने ऐतिहासिक परिवर्तित युग में प्रवेश किया तो संसार की अन्य समृद्ध भाषाओं की तरह इसमें भी शब्दानुशासन की सीमाएँ और मर्यादाएँ निश्चित की गईं। विराम चिह्नों के प्रयोग से भाषा अधिक संपृक्त तथा सुगम्य बन जाती है।

वस्तुत: लेखन मनुष्य की वैचारिकी-अभिव्यक्ति का प्रकाशन है। जैसा कि हम देखते ही हैं कि बोलते समय मनुष्य कहीं-कहीं रुकता है, कहीं कुछ विचार करता है। कहीं किसी शब्द विशेष पर अधिक बल देता है, तो किसी बात को कहकर चुप हो जाता है। पुन: दूसरे विषय पर बोलने लगता है।

लेखन में भी मनुष्य की इस मानसिक-अवस्था के अनुसार विचारांकन की व्यवस्था की गई है। इसी व्यवस्था को विराम-चिह्न कहा जा सकता है।

कभी-कभी विराम चिह्नों के गलत प्रयोगों से अर्थ ही बदल जाता है, जैसे-

1. गाओ-नाचो मत।
2. गाओ, नाचो मत।

प्रथम वाक्य में गाना-नाचना निषेध है किन्तु दूसरे वाक्य में केवल एक विराम-चिह्न के कारण अर्थ व्यंजित होता है कि गाओ लेकिन नाचो मत।

इसी प्रकार-

1. रोको, मत जाने दो।
2. रोको मत, जाने दो।

हिन्दी लेखन में प्रयुक्त होने वाले अनेक विराम चिह्नों के कुछ संकेत द्रष्टव्य हैं-

पूर्ण विराम (Full Stop)	।
अल्प विराम (Comma)	,
अर्ध विराम (Semi Colon)	;
प्रश्न सूचक (Sign of Interrogation)	?
विस्मयादिबोधक (Sign of Exclamation)	!
संक्षेपक चिह्न (Sign of Precis)	.
उद्धरण चिह्न (Inverted Comma)	''

कोष्ठक (Brackets)	( ), [ ], { }
योजक चिह्न (Hyphen)	-
निर्देशक (Desh)	–
विवरण चिह्न (Colon Desh)	:
अर्द्धवाक्य सूचक...	,
शब्दबल सूचक	ऽ ऽ ऽ!

पूर्ण-विराम (।) : पूर्ण-विराम वाक्य के अन्त में प्रयुक्त होते हैं। जब किसी बात का एक अंश पूर्ण होता है तो उसे पूरा वाक्य कहते हैं और इसी पूर्ण वाक्य के सूचकांक '।' चिह्न को पूर्ण-विराम कहते हैं, जैसे-

बिल्ली रास्ता काट गई। पण्डित जी ने पत्र देखा। बुढ़िया मर गई। राम और हरी नीरज के साथ जा रहे हैं। महेन्द्र कोटा में काम करता है। राम के लड़के का यज्ञोपवीत है। गौतम शैतान लड़का है।

इन वाक्यों के अन्त में पूर्ण विराम विश्राम की स्थिति प्रदान करता है कुछ विशिष्ट पत्रिकाओं में अँग्रेजी भाषा की तरह (फुलस्टाप की भाँति) 'डॉट' का भी प्रयोग होता है।

अल्पविराम (,) : जब एक ही वाक्य में अनेक पदबन्ध अथवा उपवाक्य एकत्र हो जाते हैं तो उन्हें पृथक करने के लिए जिस चिह्न का प्रयोग किया जाता है उसे अल्प विराम कहा जाता है। वाक्य वचन की प्रक्रिया में यह चिह्न क्षणिक विश्राम का सूचक है, जैसे-

हरीश मोना के साथ गया, शत्रुघ्न मथुरा से राम के साथ गया और शिवसिंह वहीं रह गया। नीरज, पंकज, राजीव, संजीव, गौतम, प्रवेश और दामोदर आज आ रहे हैं। तम वहाँ आओ, कुछ देर बैठो, तब, जा सकोगे।

अल्पविराम प्रयोग के कुछ नियम द्रष्टव्य हैं-

1. वाक्यांश में वाक्य के साथ जुड़े रहने का संकेत अल्पविराम कहलाता है, जैसे-
   वह आया, बैठा और चला गया।
2. अथवा, और, तथा, लेकिन जैसे यौगिक शब्दों से पहले अल्पविराम का प्रयोग नहीं होता, जैसे-
   जनार्दन, लछमन, और शाम चले गए। मां, वह अथवा ज्ञान वहाँ जाएँगे। तुम जाओ लेकिन जल्दी आ जाना। कन्हैया, शंकर तथा गिरधर बात कर रहे हैं।
3. वहाँ शब्दों का पुनरावृत्ति हो, वहाँ अल्प विराम प्रयुक्त होता है, जैसे-
   वह ऊँचे से, और ऊँचे से, और अधिक ऊँचे से कूद सकता है। देखो, देखो! वह आ रहा।
4. वाक्य के वाक्य खण्ड को पृथक् रखने के लिए अल्पविराम का प्रयोग होता है, जैसे-
   वह मकान, जो कल तक चमचमा रहा था, आज धूल में मिल गया। सुकेतु, दशरथ का भतीजा, आज मर गया। वही राकेश, जो कल छूट गया था, निश्चय ही, वह पकड़ा जाएगा। वस्तुतः, मैंने यह कार्य नहीं किया।
5. जब सम्बोधन कारक से युक्त शब्द वाक्य के प्रारम्भ में हो तो अल्पविराम का प्रयोग होता है, जैसे-
   हरीमोहन तुम जा नहीं रहे। अरे, मोहन, यह तुमने क्या कर दिया। हे राम, अब मैं क्या कर सकता हूँ।
6. वाक्यांश में अनेक क्रिया विशेषणों के प्रयुक्त होने पर अल्पविराम का प्रयोग होता है, जैसे-
   रमन, कपड़े उतारकर, तेल लगाकर, ऊपर की बुर्जी से यमुना में कूद पड़ा।

अर्धविराम (;) : अर्धविराम का प्रयोग अल्पविराम की ही भाँति होता है किन्तु इस विराम का प्रयोग अल्पविराम से कहीं अधिक देर रुकने के लिए किया जाता है। अर्धविराम वाक्य को पृथक-पथक खण्डों में विभाजित करता है, अथवा कहा जा सकता है कि अल्पविराम की अपेक्षा कुछ अधिक समय तक रुकने के लिए अर्धविराम का प्रयोग होता है, जैसे-

तुमने उसे पकड़ लिया; लेकिन वह भाग निकला।

जब वाक्य और वाक्यांश में एक-दूसरे का सम्बन्ध स्पष्ट करना हो और उस वाक्यांश को मुख्यवाक्य से जुड़े रखने के लिए अर्धविराम का प्रयोग होता है, जैसे-

वह पहुँचा हुआ सिद्ध है; यह सभी मान गए हैं। वह मर गया; घर गिर पड़ा; कर्जा सिर पर है; उसका तो अब राम ही मालिक है।

प्रश्न सूचक चिह्न (?) : प्रश्नात्मक वाक्यों के अन्त में प्रश्नसूचक चिह्न लगाया जाता है। किसी भी वाक्य में जब इस प्रकार का चिह्न लगाता है तो समझ लेना चाहिए कि वाक्य बोलने वाला सुनने वाले से प्रश्न कर रहा है। कभी-कभी इस प्रश्नचिह्न के न लगने से वाक्यांश को अर्थ भी बदल जाता है। जैसे-

तुम क्यों जा रहे हो? मैं इसे कैसे करूँ? वह कहाँ है? तुम कब आओगे? वह कौन है? तुम कहाँ जा रहे हो? मैं इस कार्य को क्यों करूँ? वह किसका है? यह किसे देना है? और वह कब आया?

संदेहात्मक अथवा व्यंग्यात्मक वाक्यों में, जिस शब्द विशेष पर सन्देह व्यक्त किया जाता हो वहाँ प्रश्नसूचक चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे-

सुनिता फासिज्म (?) थी। उसने देश का उद्धार (?) कर दिया।

जब प्रश्नवाचक शब्दों का अर्थ सम्बन्धवाचक शब्दों से जुड़ा रहता है तो वहाँ प्रश्नवाचक चिह्न नहीं लगता; जैसे-

मैं जानता हूँ कि वह क्या करेगा? शास्त्री जी कैसे मरे, इसे कौन नहीं जानता?

विस्मयादिबोधक चिह्न (!) : जिस वाक्य में हर्ष विषाद, आश्चर्य, भय, करुणा, घृणा, दया आदि के भाव व्यक्त होते हों तो वहाँ वाक्यान्त में इस चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे-

हाय ! मैं मरा! अरे! यह क्या हो रहा है! वाह! क्या आनन्द आ रहा है! हाय! वह चल बसा! अरे! यह सब क्या है? छि:! चलें यहाँ से। ओह! वह डूब रहा है। हे भगवान्। बचाओ! छि:!तुम्हें धिक्कार है। हे प्रभो! रक्षा करो। ओहो! तुम आ गए।

आदरणीय सम्बोधन व्यक्त करने हेतु भी यह चिह्न प्रयुक्त होता है। जैसे-

हे प्रभु! मेरा उद्धार करो। गुरु जी! मुझ बचाओ। हे माँ! आशिष प्रदान करो। हे माँ! तेरा ही सहारा है।

संक्षेप चिह्न (.) : इस प्रकार के संक्षेप चिह्न तब प्रयुक्त होते हैं जब हम किसी शब्द को पूर्ण न लिखकर अपूर्ण कर लिख देते हैं तथा उसके आगे (.) यह चिह्न लगा देते हैं तो उस अपूर्ण शब्द का पूर्ण अर्थ ग्रहण किया जाता है; यथा-

एम. ए., पी. एच. डी., म. स. विश्वविद्यालय म.ला. गुप्ता, मा. चतुर्वेदी, ग. चौबे। एस. एस. शर्मा, स्वर्गीय के लिए स्व., पण्डित के लिए- पं., डॉक्टर के लिए- डॉ. आदि

उद्धरण चिह्न (''....'') : जब किसी वाक्यांश अथवा शब्द के विशेष अभिप्राय से अथवा किसी दूसरे ग्रन्थ से उद्धरित करके, जैसे का तैसा लिखा जाता है, तब उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है। प्राय: कवि का उपनाम, कविता शीर्षक, लेख का शीर्षक, इकहरे उद्धरण चिह्न में रखा जाता है।

जब किसी अन्य पुस्तक के शब्दों को जैसे का तैसा लिखना हो तो दुहरे उद्धरण चिह्न '' '' का प्रयोग होता है, जब किसी नाम विशेष को इंगित करना हो तो '...' इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे-

''यह साहित्य के जटिलतम प्रश्न कहे जा सकते हैं।'' (पुस्तक का उद्धरण)

'साकेत' मैथिलीशरण गुप्त की सशक्त रचना है।

यह गोस्वामी तुलसीदास विरचित 'रामचरित मानस' में लिखा है।

जब किसी अन्य भाषा या उपभाषा के शब्द का प्रयोग नागरीलिपि में ही किया जाता है तो उस शब्द को इकहरे उद्धरण चिह्न में प्रयुक्त होता है-

ज्ञानचन्द्र (हरीश-गिरीश के पिता) आए थे।

उसकी समझ (Knowledge) बहुत कमजोर है।

गणित में इस प्रकार के कोष्ठकों का प्रयोग होता है-

4 + 5 – (8 + 2 - 3) ग 3

कभी-कभी लेखक अपना अभिप्राय व्यक्त करने के लिए भी कोष्ठक का प्रयोग करता है-

नेताजी हवाई दुर्घटना में मारे गए, (हालाँकि श्री सेन इसे नहीं मानते।)

नेहरू जी ने परोक्षरूप से साम्यवादी व्यवस्था (चीन की तरह नहीं) को स्वीकार नहीं किया था।

योजक चिह्न (-) : सामासिक अथवा पुनरुक्त शब्दों के बीच योजक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

रात-दिन, हानि-लाभ, जीवन-मरण, राम-लक्ष्मण। दिन-रात वह सोता ही रहता है। दीवार-घड़ी बन्द हो गई है। वह पढ़ते-पढ़ते सो गया। वह पढ़ते-पढ़ते रुक गया। वह दौड़ते-दौड़ते गिर पड़ा। वह रुकते-रुकते चला गया।

निर्देशक चिह्न (-) : यह चिह्न योजक चिह्न से कहीं बड़ा होता है। जब किसी विशेष शब्द को बल देकर प्रस्तुत किया जाता है, अथवा उस विशिष्ट शब्द के विषय में कुछ कहा जाता है तब निर्देशक चिह्न का प्रयोग होता है-

उसने कहा था- मैं जबरदस्ती कर रहा हूँ!

उर्वशी में मुख्य पक्ष दो हैं- भाव तथा कला।

शब्दालंकार :

यह प्रयोग ठीक नहीं है, जैसे-

विवरण चिह्न (:-) : इस प्रकार के विवरण चिह्नों का प्रयोग तभी होता है जब किसी अर्थाभिप्राय से कुछ विवरण अथवा सूचना व्यक्त की जाती है। जैसे- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

निम्नलिखित ढंग से इसे स्पष्ट किया जाएगा-

अर्धवाक्य सूचक चिह्न (.....) : जब किसी वाक्य अथवा शब्द को कौतूहल आश्चर्य अथवा अनावश्यक समझकर पूरा नहीं लिखा जाता तो अर्धवाक्य सूचकांक (.....) लगाकर उसे छोड़ दिया जाता है; जैसे-

तुम चले आना, नहीं तो...,

उस दिन मुझे ऐसे ही..., जाना पड़ा।

उसने कहा, तुम निरुपमा...;

शब्दबल सूचकांक (ड ड ड) : जब किसी शब्द विशेष पर अधिक जोर दिया जाता है तब इसका प्रयोग किया जाता है-

गणेश। आगे मत जाना डडड

राम! तुम कहाँ हो डडड

अन्य संकेत चिह्न!

जब एक ही पृष्ठ पर एक विषय को दूसरे सन्दर्भ में प्रारम्भ से लिखना होता है, तो विषय के अन्त में क--ख--ग का चिह्न लगाकर पृष्ठ पर उस विषय को अन्तिम रूप दे दिया जाता है। जैसे-

(क) रामायण, (ख) महाभारत, और (ग) भावगत में प्राचीन पौराणिक।

तुलना सूचक चिह्न : (=)

यह चिह्न बराबरी समानता अथवा तुलना के लिए प्रयुक्त होता है। प्राय: इसका प्रयोग गणित में देखा जाता है। हिन्दी में भी शब्दार्थ प्रकट करने में इसका प्रयोग मिलता है; जैसे-

रवि = सूर्य,

राकेश = चन्द्रमा,

जलज = कमल,

पंकज = कमल

2 + 1 = 3,

4 + 6 = 10

समाप्ति सूचक-चिह्न (-----´-----´-----´-----) यह चिह्न रचना, लेख, समीक्षा एवं कथन की समाप्ति पर लगाया जाता है जैसे- (-----´-----´-----)

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :

(1) पूर्ण विराम किसे कहते हैं ?

(2) अर्ध विराम किसे कहते हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में दीजिए :

(1) कोष्ठक किसे कहते हैं ?

(2) उद्धरण चिह्न किसे कहते हैं ?

(3) प्रश्नसूचक चिह्न किसे कहते हैं ?

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्ति : विराम चिह्नों की सूची बनाकर उनके प्रयोग से संबंधित वाक्य संकलित कीजिए।

(2) शिक्षक प्रवृत्ति : विद्यार्थियों को उच्चारण में विराम लेने के अनुरूप विराम चिह्नों का प्रयोग समझाते हुए उन्हें प्रत्यक्ष रूप में विरामचिह्नों का सही प्रयोग करने हेतु प्रेरित कीजिए।